सेंट एंड्र्यूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीतिअपार्टमेंट ,आई.पी.एक्सटेंशन,

पटपडगंज,दिल्ली - ११००९२

सत्र:- २०२५-२६

कक्षा:-8 | **विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक** | **पाठ:4 अपराजिता**

मौखिक कौशल

1.लेखिका ने कार का दरवाज़ा खुलते ही एक युवती को बैसाखियों के सहारे कार से उतरते देखा।

2. लखनऊ का मेधावी युवक ट्रेन से नीचे गिरा और पहिये के नीचे उसका हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए, पर दायाँ हाथ चला गया।

3. चंद्रा पोलियो का शिकार हो गई थी।

4. चंद्रा ने अपनी स्कूली शिक्षा बंगलौर (बैंगलूरू) के प्रसिद्ध माउंट कारमेल स्कूल से पूरी की थी।

5. चंद्रा के एलबम में अंतिम पृष्ठ पर उनकी माता शारदा सुब्रह्मण्यम का चित्र लगा था।

6. चंद्रा को सन् 1976 में 'डॉक्टरेट' की उपाधि मिली।

लिखित कौशल

१ (क) लेखिका के अनुसार कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है।

(ख) लेखिका ने पहली बार चंद्रा को अपनी कोठी में कार में उतरते देखा था।

(ग) जब लेखिका ने चंद्रा की कहानी सुनी तो दंग रह गई। लेखिका को वह लड़की किसी देवांगना से कम नहीं लगी क्योंकि चंद्रा नियति के प्रत्येक कठोर आघात को धैर्य एवं साहस से झेल रही थी।

(घ) जब चंदा को पता चला कि लेखिका लखनऊ जाने वाली हैं तब उसने लेखिका से आग्रह किया, "मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि वहाँ आने पर माइक्रोबायोलॉजी से संबंधित कुछ सामग्री मिल सकेगी?"

(ङ) चंद्रा ने तस्वीरें दिखाते हुए कहा था, "मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य -सा सहारा भी न है। आप तो देखती ही हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का मॉडल बनाया है जिससे में अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। और यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपने काम-काज का संचालन कितना सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निपटा लेती हूँ।"

च) लेखिका ने चंदा की माँ को अद्भुत साहसी जननी कहा था क्योंकि पच्चीस वर्षों तक इस सहिष्णु महिला ने भी पुत्री के साथ-साथ कठिन साधना की। उन्होंने अपनी बेटी चंद्रा की बहुत देख-रेख की थी।

(च) सही

2. (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) सही (क) गलत

3. (क) इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि यदि मनुष्य में साहस, इच्छाशक्ति, मेहनत करने की आदत एवं लगन हो तो उसके समक्ष बड़ी से बड़ी परेशानी भी सूक्ष्म हो जाती है। जिस तरह चंद्रा ने जन्म से पोलियोग्रस्त होने के बावजूद स्वयं को किसी से कम न समझते हुए, वह मुकाम हासिल किया जहाँ उसके पहुँचने की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। यह उसके आत्मविश्वास तथा अदम्य साहस का ही परिणाम है।

(ख) कहावत है कि भगवान के घर में देर है अँधेर नहीं। ईश्वर कभी भी बिलकुल निराश नहीं करता। कहीं न कहीं कोई रोशनी की किरण अँधेरे जीवन में डाल ही देता है। एक रास्ता बंद

करता है तो दूसरा खोल भी देता है। अतः हमें अपना कर्म करते रहना चाहिए। फल को ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए।

मूल्यपरक प्रश्न

1. इन पंक्तियों से पता चलता है कि चंद्रा एक साहसी एवं मजबूत इरादों वाली लड़की है। वह प्रत्येक मुसीबत को आसानी से हँसते हुए, झेलती है। अपनी कमियों के लिए भगवान को दोष न देकर अपनी कमी को ही अपनी शक्ति बनाने का प्रयास करती है।

2. डॉ. चंद्रा की माँ ने अपना फर्ज बखूबी निभाया है। उन्होंने कभी भी अपनी बेटी को असहाय महसूस नहीं होने दिया। उन्होंने कदम-कदम पर अपनी बेटी चंद्रा को मजबूती प्रदान की। खुद ढाल बनकर चंद्रा को दुनिया से लड़ने की हिम्मत दी। ऐसी जननी निःसंदेह धरती माता की तरह पूजनीय है। उनके चरित्र से हम भी ऐसा बनने की प्रेरणा ले सकते हैं